हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–27 मार्च, 2020)

हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास

हिन्दी साहित्य को जानने–समझने के लिए हिन्दी साहित्य के इतिहास का परिचय हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए अत्यंत आवष्यक है। वह समाज के इतिहास से अनेक रूपों से जुड़ी व्यापक सामाजिक इतिहास का अंग होती है। हिन्दी साहित्य के अबतक के लिखे गये इतिहास में महत्त्वपूर्ण हैं– फ्रेंच विद्वान गार्सा द तासी हिन्दी साहित्य के इतिहास के पहले इतिहासकार थे। उन्होंने 'इस्तवार द ला लितेरात्युर ऐंदुई ऐंदुस्तानी' नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। यह इतिहास इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि पहली बार किसी विदेषी भाषा के विद्वान ने अपने नजरिये से हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयास किया। दूसरे भारतीय इतिहासकार और उर्दू के विद्वान मौलवी करीमुद्दीन हैं। करीमुद्दीन साहब ने 'तबका तष्षुअहा में तजकिरान्ई जुअहा–ई हिन्दी' नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। तीसरे इतिहासकार थे षिवसिंह सेंगर, जिन्होंने 'षिवसिंह सरोज' नाम से इतिहास लिखा। चौथे महत्त्वपूर्ण और दूसरे विदेषी इतिहास लेखक थे जार्ज ग्रियर्सन। जार्ज ग्रियर्सन ने 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर ऑफ हिन्दुस्तान' नाम से इतिहास लिखा। यह इतिहास इसलिए महत्त्वपूर्ण माना गया कि उसमें आलोचनात्मक हस्तक्षेप है।

बाद चलकर मिश्र बन्धुओं (ष्याम बिहारी मिश्र, षुकदेव बिहारी मिश्र, गणेष बिहारी मिश्र) ने 'मिश्रबन्धु बिनोद' लिखा। इन सभी इतिहास और इतिहासकारों के गहन अध्ययन से पता चलता है कि उन्होंने प्रायः कविवृत्त और उसके उदाहरणों से इतिहास को वृत्तात्मक बनाया, इतिहास नहीं लिखा। ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि उपर्युक्त सभी इतिहास लेखकों में मौलिक रूप से इतिहास दृष्टि का अभाव है। केवल कविवृत्त और उनके काव्यों के उदाहरणों से सजाए गये उक्त इतिहासों में तथ्य, पद्धति, कारण–कार्य संबंधों और आलोचनात्मकता का अभाव खटकता है।

'मिश्र बन्धु बिनोद' को आधार मानकर ही आचार्य रामचन्द्र षुक्ल ने 1929 ई0 में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा जो सर्वाधिक प्रामाणिक, व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक रूप में तथ्याश्रित और तर्कसम्मत इतिहास माना गया। आचार्य रामचन्द्र षुक्ल का इतिहास खासकर उसमें वीरगाथाकाल के तथ्यों की प्रामाणिकता और भक्तिकाल के कुछ संदर्भों में 'ब्राह्मणवादी' मान्यताओं पर विवाद को लेकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इतिहासकार के रूप में प्रमुखता से सामने आए और उन्होंने उन विवादों का समाधान अपने इतिहास में प्रस्तुत किया। हिन्दी साहित्य से संबंधित द्विवेदी जी की तीन पुस्तकें मुख्य हैं जिनमें– 1. हिन्दी साहित्य की भूमिका 2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल और 3.

हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक तरह से कहा जाय तो आचार्य रामचन्द्र षुक्ल के इतिहास की परंपरा का विकास किया। किन्तु सूक्ष्मता पूर्वक देखने पर साफ पता चलता है कि आचार्य षुक्ल की ब्राह्मणवादी परंपरा से हटकर लोकवादी परंपरा का विकास किया। इसकी खोज डॉ. नामवर सिंह ने 'दूसरी परंपरा' के रूप में देखा है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद भी हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन का काम थमा नहीं। रामकुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास लिखा। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य' लिखा। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' लिखा। डॉ. नगेन्द्र ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास; हिन्दी वांग्मय 20वीं षती' नामक इतिहास लिखा। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास' लिखा। बच्चन सिंह ने 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' लिखा।

किसी भी इतिहास में मूलतः दो बातें होनी आवष्यक है। एक कालक्रम में व्यवस्थित तथ्य–श्रृंखला और दूसरी युगीन चेतना प्रवाह। इन दोनों के समन्वय से इतिहास की सही धारणा बनती है। इन धारणाओं से इतिहास के काल विभाजन और प्रवृत्ति निरूपण में सहायता मिलती है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि 'काल' और 'युग' दोनों अलग आयाम हैं। काल मूलतः तीन रूपों में परिभाषित होती रही है– 1. आदिकाल 2. मध्यकाल और 3. आधुनिक काल। युगों का संबंध प्रवहमान धारा के टर्निंग प्वाइंट अथवा नयी चेतना के जागरण और प्रचलित होने से है। इन दोनों के इस भेद को हमेषा याद रखते हुए सभी कालों अथवा सभी युगों में एक ही आधार पर नामकरण तर्कसंगत होता है। इसी प्रकार किसी भी नये युग या कालखंड में नवीन प्रवाह का परिचय और विवेचन तभी सार्थक होता है, जब पूर्ववर्ती परंपराओं की निरंतरता में उसे देखा, समझा और अभिव्यक्त किया जाय। आचार्य रामचन्द्र षुक्ल के इतिहास में कुछ कमियों के बावजूद काल–विभाजन और नामकरण का आधार साहित्य की प्रवृत्तियों और कारण–कार्य सिद्धांतों को लेकर है। वीरगाथाकाल में वीरता की प्रवृत्ति, मध्यकाल में भक्ति और रीति की प्रवृत्ति और आधुनिक काल में आधुनिकता, जागरण, अस्पष्टता और प्रगतिषीलता की प्रवृत्ति इसी बात को द्योतित करता है। इसी तरह आदिकाल से उद्भव काल, मध्यकाल से विकास काल और आधुनिक काल से समृद्धि काल द्योतित है।

दिनांक : 27/03/2020 — महेष प्रसाद सिन्हा